स्टाक मार्केट – शेरकी जाईझ नाजाईझ शक्लें।

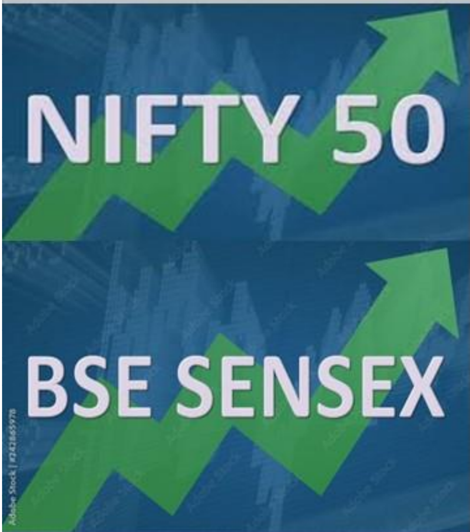

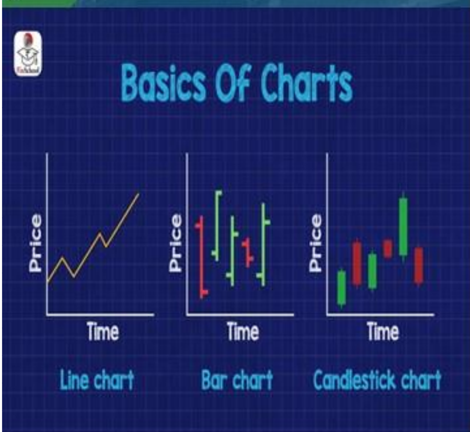

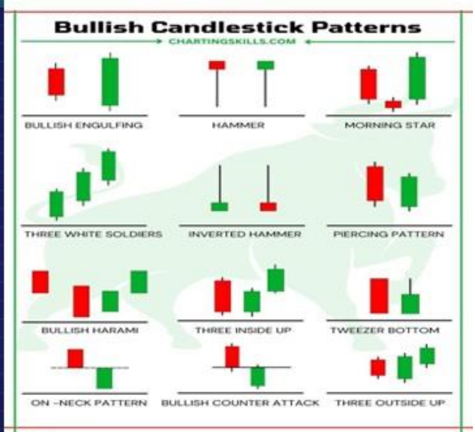

मुअल्लीफ

मुफ्ती इमरान इस्माईल मेमन

उस्तादे दारुल उलूम रामपुरा सुरत

म्सअला नंबर	# फेहरिस्ते मझामीन	पेज नंबर
१	पेश ए लफ्ज	३
२	माल खाने का मतलब और दुसरों के माल को अपना माल केहने की हिकमते।	६
३	कोन से शेर बेचना जाइज़ है?	८
४	सूद पर रक़म रखनेवाली कंपनी के शेयर।	९
५	शेयर कंपनी के सुदी मुआमले का हुक्म।	१०
६	शेयर में क़ब्ज़ा किसे कहते है ?	१२
७	शेयर पर क़ब्ज़ा की गुंजाईश वाली शकल।	१४
८	फॉरवर्ड सेल।	१६
९	शॉर्ट सेल का हुक्म।	१६
१०	शेयर की डे ट्रेडिंग।	१७
११	फ्यूचर सेल का हुक्म।	१८
१२	शेयर एजेंट को उधार बेचना।	१८

पेश ए लफ़्ज़

अल्हमदुलिल्लाह मसाइल का सिलसिला "आज का सवाल " के उनवान से ८ आठ साल से जारी है इस में तेहवार,हालत और मव्के की मुनासिबत से भी मसाइल आते रहते है। और थोड़ा थोड़ा कर के एक ही मवज़ू पर बहोत से मसाइल को अल्लाह ने जमा करा दिया है। इसी तरह पैगाम व मसाईल के नाम से भी कुर्आन ए करीम की अक्सर आयतों की तफ़सीर लिखने का सिलसिला “ सुरए फातिहा ” से अल्लाह तआला ही की तौफीक से शुरुअ किया था , जो पोने तीन पारे तक, तकरीबन ३०० आयात तक अल्हम्दुलिल्लाह पोंहचा है, और उस के अलावा जो आयतें मवका महल के ऐतिबार से होती है, उस की तफ़सीर भी लिख दी गई है।

मावज़ूअ की तमाम आयतों को घेरना मक़सूद नहीं, उसे में से मसाईल की मुनसबत से आयत का इंतिख़ाब कर के किताब में रख

दी गई है, ताकी मसाईल के साथ साथ क़ुरान ए करीम की भी रहनुमाई हसिल हो।

बाज दोस्तों ने खाहिश की के इन मसाइल को पी.डी.एफ. की शकल में जमा कर के शोशयल मीडिया पर आम कर दिया जाए ताके लोगों का फायदा उठाना और फाइदा पहुंचाना आसान हो जाए । लिहाजा अल्लाह पर तवक्कुल कर के ये काम शुरू कर दिया गया है। अल्हम्दु लिल्लाह।

दुआ फरमाए अल्लाह तआला इस सिलसिले को दिन के हर मावजूअके एअतेबारसे मुकम्मल फरमाए। और बंदे और बंदे वालीदैन, असातीजाह, खुसूसन बंदे के पिरो मुर्शीद हजरत मुफ्ती अहमद खान पूरी दामत बरकातुहुम ये खिदमात उन की तवज्जुह और दुआ का नतीजा है।(अल्लाह उन के साए को हम पर और उम्मत पर आफियत के साथ ता देर काईम रखे) (आमीन सुम्मा आमीन)।

और तरजमे में तावून करने वाले मेरे दोस्तों के हक में सदह ए जारिया और नजात का जरिया बनाए। (आमीन सुम्मा आमीन)।

आगर किसी को ये रिसाला चपवाना हो, तो इस्तेमाल करें, और छपवाकर ना चीज की तरफ से " मुफ्त तकसीम करने " और " फारोख्त करने " की मुक्कम्मल इज्जत है।

अखीर में नाजीरीन से दरखास्त है के उस में कोई गलती मालुम हो या कोई मुफीद मशवरा तो बंदे मूततले करे जजाकल्लाह।

:: अहकर::

इमरान इस्माइल मेमन।

+९१ ९६८७३ ४१४१३

२४ शव्वालुल मुकार्रम १४४४ हिजरी

३ मई – २०२४।

♦ माल खाने का मतलब और दुसरों के माल को अपना माल केहने की हिकमते।

🌹 कुरआन का पैग़ाम नं : १। 🌹

أَعوذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطانِ الرَّجيم

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

وَلَا تَأْكُلُوٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

तरजमह

"ना हक़ तरीक़े से एक दूसरे का माल मत खाओ"

तफ़्सीर

لَا تَأْكُلُوْٓا-"मत खावो"

यानि इस से सिर्फ खाना मुराद नहीं, जैसे के बाज़ लोग हराम पैसा पेट्रोल, बैतुल खला वगैरह में इस्तेमाल को जाइज़ समझते हैं के हम हराम खा नहीं रहे है। याद रखो ये ज़बान का महावराह है के, 'फूला मेरे पैसे खा गया।' इस से मुराद खाना नहीं बल्कि इस्तेमाल कर डालना है। इसी तरह यहाँ भी हराम माल का हर तरीक़े का इस्तेमाल हराम है।

اَمْوَالَكُمْ- - "अपने माल को

इस का असली माना है अपने मालो को, इसारा इस तरफ हो गया के तुम जो दुसरे के मालों को नाज़ाइज तरीके से हासिल करते हो, यह गौर करो के दूसरे सख्श को भी अपने माल से ऐसी ही मोहब्बत और ताल्लुक़ है जैसा तुम्हें अपने माल से है अगर वह तुम्हारे माल मैं ऐसा नाजाइज़ तरीक़ा इख़्तियार करता तो तुम्हें जो दुःख पहुँचता उसका इस वक़्त भी ऐसा ही एहसास करो।गोया वह तुम्हारा माल है।

इसके अलावा इशारा इस तरफ भी हो सकता है के जब एक दूसरे के माल को कोई नाजाइज़ तरीक़े से हासील करेंगा तो उसका फितरी नतिजा ये होगा के ये रसम चल पड़ेगी। तो दूसरे उसके माल मैं ऐसा ही तरीका इख़्तियार करेंगे इस हैसियत से किसी शख्श के माल मैं नाजाइज़ तरीका इख़्तियार करना अपने माल में नाजाइज़ तरीक़े को इख़्तियार करने के लिए रास्ता खोलना है। और गौर कीजिये ज़रूरत की चीज़ों में मिलावट की रस्म चल जाए तो कोई घी में तेल या चर्बी मिला कर नाजाइज़ पैसे हासील करें तो उसको जब दूध खरीदने की ज़रूरत पड़ेगी तो दूध वाला उस में पानी मिला कर देगा, मसाले की ज़रूरत पड़ेगी तो उसमें मिलावट होगी, दवा की ज़रूरत पड़ेगी तो उस में भी यही मंज़र सामने आएगा जितने पैसे

मिलावट करके ज़ाईद हासील कर लिए दूसरा आदमी वोह पैसे उसकी जब से निकाल लेता है इस तरह दूसरे के पैसे तीसरा निकाल लेता है यह अपनी जगह पैसों की ज़्यादती गिनकर खुश होता है अंजाम नहीं देखता उसके पास क्या बाक़ी रहा तो जो कोई दूसरे के माल को गलत तरीक़े से हासील करता है हकीकत में अपने माल के लिए ना जाइज़ तरीक़ों का दरवाजा खोलता है।

"नाजाइज़ तरीक़े से" - بِالْبَاطِلِ

हमारे मुआशरे में ये नाजाइज़ तरीक़े मश्हूर है,दबाव ,शर्म में डाल कर ख़रीदना,बेचना, बगैर क़ब्ज़े के बेचना,किराये या वक़्फ की जगह पर हमेशा के लिए नाजाइज़ क़ब्ज़ा या उसे बेच ड़ालना या अपने नाम पर करवा लेना, सरकारी जगह का किराया लेना, क़ीमत तय कर लेने के बावजूद क़सर देना-पैसा कम देना वगैरह।

सूरह ए बक़रह। **आयत।१८८।**

तफ़सीर ए मारिफुल कुरान से माखुज़।

والله اعلم بالصواب

♦ कोन से शेर बेचना जाइज़ है?

<u>अस्सवाल</u>

➢ कौनसे शेयर खरीदना जाईझ है कौनसे खरीदने ना जाईझ है?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

जीस कंपनी का कारोबार शरिअत के खिलाफ न हो उस कंपनी के शेयर खरीदना यानी कंपनी में हिस्सेदार बन्ना जाईझ है और जीस कंपनी का कारोबार शरिअत के खिलाफ हो उस्के शेयर खरीदना जाईझ नहीं।

📗 **फतावा उस्मानी ३/१७७ से माखूझ।**

واللہ اعلم بالصواب

♦ सूद पर रक़म रखनेवाली कंपनी के शेयर।

अस्सवाल

➢ जोइन स्टॉक कम्पनीज के शेयर खरीद कर उस के डिविडन्ड को आमदनी का ज़रिया बनाने, शेयर आर्डिनरी हैं और कम्पनीज जाइज़ तिजारत और बनावट (production) का काम करती है मगर फायनान्सिंग के लिए रकम सूद पर हासिल करती है तो उस का किया हुक्म है?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

इस सूरत में शेयर खरीदना जाइज़ है.

अल्बत्ताह कंपनी वालों को लिख दिया जाये के सूद के लेन-देन पर हम राज़ी नहीं हैं और कंपनी के सालाना इज्तिमा (Annual Meating) में भी इस बात का इज़हार कर दिया जाये चाहे फिर कंपनी वाले आप की बात पर अमल न करें लेकिन इस तरह कह कर बरीउज़ ज़िम्माह हो जाना चाहिये।

📗 **फतवा उस्मानी ३/१९१ से माखूज।**

📗 **तफसील और हवाले के लिए इम्दादुल फ़तवा ३/४९१।**

والله اعلم بالصواب

♦ शेयर कंपनी के सुदी मुआमले का हुक्म।

<u>अस्सवाल</u>

- हर कंपनी अपने जाइज़ कारोबार में लोन लेती है, मशीनरी, ज़मीन वगैरह के लिए और फिक्स डिपॉजिट् में भी अपनी एक रक़म रखती है। तो उसका नफ़ा लेना कैसा है ?

<u>अलजवाब</u>

<u>حامدا و مصليا و مسلما</u>

शेयर ख़रीदने से पहले ये बात भी ज़रूरी है के उन को सालाना मीटिंग में या ईमेल कर के ये बात कही जाये के में मुसलमान हूं,

हमारे मज़हब में सूद- इंटरेस्ट हराम है। लिहाज़ा किसी तरह सूदी मुआमले से में राज़ी नहीं हूँ, मुझे इस का नफ़ा नहीं चाहिए।

अगरचे लोग आप की बात सुनेगे नहीं बल्कि आप की आवाज़ ढोल की आवाज़ के सामने चिड़िया की आवाज़ की तरह होगी।

लेकिन इस तरह हराम मुआमले और हराम नफ़े से बरीउज़्ज़िम्मा होना ज़रूरी है, ताके हमारी शिरकत- पार्टनरशिप सिर्फ हलाल में हो।

और हर कंपनी फिक्स डिपोजिट में भी नफ़े के लिए क़ानून की वजह से पैसा रखती है। लिहाज़ा उस के नफ़े में से आप के शेयर के नफ़े का जितना फीसद, (%) टका के ऐतिबार से बाँटा हो उतना मसलन २% निकाल कर गरीब को बगैर सवाब की निय्यत से सदक़ा ज़रूरी है।

📗 **फ़तावा दारुल उलूम ज़करिया ५।**

📘 **फ़िक़्ही मसाइल से माखूज़।**

واللہ اعلم بالصواب

♦ शेयर में क़ब्ज़ा किसे कहते है ?

अस्सवाल

- शेयर बाजार में बी.एस.इ. लिमिटेड (इंडिया) में शेयर खरीदने के थर्ड डे पुल्ल डीपी (ब्रोकर के अकाउंट में) डिलीवरी आ जाती है.
- (यानी पीर के रोज़ ख़रीदे हुए शेयर्स की डिलीवरी बुध के रोज़ ब्रोकर के अकाउंट में
- (जिसे पुल्ल डीपी कहते है) जमा हो जाती है.

तो पीर के रोज़ ख़रीदे हुए शेयर्स बुध के रोज़ बेच सकते है या नहीं ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

शेयर पर क़ब्ज़ा ज़रूरी है और शॉर्ट सेल में क़ब्ज़ा शेयर सिर्फ कागज़ और सार्टिफिकेट मिल जाने का नाम नहीं बल्कि कंपनी के कारोबार में बाक़ाइदाह शरीक होने का नाम है क़ब्ज़ा सिर्फ अकाउंट में से पैसे कट जाने से या आप के नाम पर शेयर ट्रांसफर हो जाने से या शेयर का भाव ; घटने और बढ़ने से नहीं होता है बल्कि सामने

वाली कंपनी का अपना क़ब्ज़ा छोड़ना या दूसरे का क़ब्ज़ा हटाना भी ज़रूरी है जैसे स्टॉक एक्सचेंज की डिफेंस में 'बाय इन' कहा जाता है वह ज़रूरी है और ऐसा होते हुवे तीन दिन लग जाते है ये बात रूल्स फॉर रेडी डिलीवरी कॉन्ट्रैक्ट्स की पहली दफा में लिखी हुई है।

क़ब्ज़ा न होने की एक दलील ये भी है शेयर बेचने वाली कंपनी को ज़ैद को शॉर्ट सेल करने के बाद ज़ैद ही को वह शेयर बेचने पर मजबूर नहीं कर सकते वह चाहे तो बकर को भी बेच सकती है और न बेचना चाहे तो यूँ भी कह सकती है के ज़ैद तुम इतनी कीमत के इसी कंपनी के शेयर इतनी ही मिक़दार में बाजार से खरीद लो बेचने वाले को ये इख़्तियार भी बता रहा है उस ने क़ब्ज़ा नहीं छोड़ा था।

इस को एक मिसाल से समझो जैसे आप ने उस मकान को खरीदा जिस में रहता हूँ पैसे भी दे दिए और क़ब्ज़ा रशीद भी आप के नाम की बन गई लेकीन मेने उस घर का क़ब्ज़ा छोड़ा नहीं है बल्कि उस में रह रहा हूँ आप के पुरे इख़्तियार में वह घर आया नहीं है के जब

चाहे रहने आ जाओ या किसी को रहने भेज दो तो ये घर पर क़ब्ज़ा नहीं हुवा कोई भी क़ुदरती आफत सेलाब, ज़लज़ला आएगा तो नुकसान मेरा ही शुमार होगा क्यों के में ने उस घर का क़ब्ज़ा नहीं छोड़ा है. और उस को घर को में किसी और को भी बेच सकता हूँ कियूं आप ने क़ब्ज़ा नहीं लिया है।

लिहाज़ा मज़्कूरह सूरत में पीर को kharide huwe शेर को बुध को बेचना जाइज़ नहीं।

📘 **फतावा उस्मानी जिल्द ३ सफ़ा १७८ से १८६ बहस का खुलासा मा मिसाले ज़ैद।**

والله اعلم بالصواب

♦ शेयर पर क़ब्ज़ा की गुंजाईश वाली शकल।

<u>अस्सवाल</u>

- शेयर हम ख़रीदते है तो उसी दिन हमारे अकाउंट में से पैसे कट कर हमारे इख़्तियार में आ जाता है।
- हम उसे आगे भी बेच सकते है।
- ऐसे क़ब्ज़े को बाज़ मुफ्तियाने किराम सहीह कहते है।

- और आप के भेजे हुवे फ़तवे में तिन दीन बाद लिखा था, और लोग एक दिन वाले क़ौल पर अमल कर कर है तो इस की गुंजाईश है या नहीं ?

अलजवाब

حامدو مصليا و مسلما

शेयर में हक़ीक़ी और महसूस तरीक़े से क़ब्ज़ा होता नहीं है बल्कि हुकमी क़ब्ज़ा होता है, और हुकमी क़ब्ज़े की तारीफ-(defination) में फुक़्हा का इख़्तिलाफ है।

लिहाज़ा अगर शेयर ख़रीदार की पुरे रिस्क और ज़िम्मेदारी में इस तौर पर आ जाता हो इस तरीक़े पर के अब जो भी नफ़ा या नुक़्सान हो तो इसी ख़रीदार का समझा जायेगा, तो ऐसे क़ब्ज़े की भी बाज़ मुफ्तियाने किराम ने जो गुंजाईश दी है उसपर भी अमल कर सकते है।

स्टॉक एक्सेंज में सोदो के कंप्यूटर के रिकॉर्ड में खरीदार का नाम तो दर्ज हो जाता है लेकिन पैसे दो दिन के बाद देने होते है, और बेचने वाला असल डिलीवरी भी दो दिन बाद देता है, लिहाज़ा बेहतर और एहतियात यही है के दो तीन दिन बाद शेयर आगे बेचा जाए।

📘 **जदीद मालियति इदारे फ़िक़्हे इस्लामी की रौशनी में ८२।**

📗 **जदीद फ़िक़्ही मसाइल जिल्द १ और ४।**

📕 **फतवा दारुल उलूम ज़करिया ५/२२८।**

واللہ اعلم بالصواب

♦ फॉरवर्ड सेल।

अस्सवाल

➢ फॉरवर्ड सेल यानि मेरे पास क़ब्ज़े में शेयर है, उस को आइन्दह की तारीख, एक हफ्ते या महीने बाद के लिए अभी से बेच कर सौदा मुकम्मल कर लूँ। तो ये कैसा है?

अलजवाब

حامدا و مصلیا و مسلما

शेयर की ये शकल जिस में आइन्दह का सौदा अभी से हो जाइज़ नहीं।

📗 **फ़तावा दारुल उलूम ज़करिया ५/१२८।**

واللہ اعلم بالصواب

♦ शॉर्ट सेल का हुक्म।

अस्सवाल

➢ शोर्ट सेल जाइज़ है या नहीं ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

शोर्ट सेल यानि गैर मम्लूक को बेचना ।

यानि बेचने वाला ऐसे शेयर को बेचता है जो उस की मिल्क में आये नहीं है, वह इस उम्मीद पर सोदा कर लेते है के वह चीज़ में खरीदार को दे दूंगा लिहाज़ा शोर्ट सेल जाइज़ नहीं ।

📗 **फतावा दारुल उलूम ज़करिया ५/२२८।**

واللہ اعلم بالصواب

♦ शेयर की डे ट्रेडिंग।

अस्सवाल

➢ आज कल ऑनलाइन शेयर खरीद कर उसी दिन भाव बढ़ जाये तो बेच देते है. हमारे खाते में से पैसे कट जाते है और खरीदने वाले में हमारा नाम भी बताता है तो ये ट्रेडिंग सहीह है?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

मज़्कूरह सूरत में जब तक शेयर पर आप का क़बजह न हो आगे बेचना नाजाइज़ है, और हमारी (करांची के दारुल इफ्ता की जमात) की तहक़ीक़ात के मुताबिक़ शेयर क़ब्ज़ा में तीन दिन पहले

नहीं आता, लिहाज़ा ऑनलाइन खरीदने के बाद तीन दिन पहले बेचना जाइज़ नहीं.

📗 **फतावा उस्मानी ३/१७८से १८६ शैखुल इस्लाम हज़रत मुफ़्ती तकि उस्मानी करांची दा.ब. की।**

والله اعلم بالصواب

♦ फ्यूचर सेल का हुक्म।

अस्सवाल

➢ शेर के कारोबार में फ्यूचर सेल करना कैसा है ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

शेर की इस क़िस्म में मक़सूद शेर खरीदना नहीं होता है, बल्कि सिर्फ नफ़ा नुक़्सान बराबर करना होता है, ये भी जुवे और सत्ते की एक क़िस्म है। लिहाज़ा जाइज़ नहीं।

📗 फ़तावा ज़करिया ५/२२७।

والله اعلم بالصواب

♦ शेयर एजेंट को उधार बेचना।

अस्सवाल

➢ एजेंट से शेयर खरीदा फिर उसी एजेंट को एक महीने के वादे से बेच देना कैसा है ?

अलजवाब

حامدا و مصليا و مسلما

एजेंट से ख़रीदने के बाद उस शेयर की डिलीवरी ले, उस के बाद उसको बेचना जाइज़ है।

डिलीवरी लेने से पहले उसे को बेचना भी जाइज़ नहीं।

📗 **फतावा उस्मानी ३/१९०।**

والله اعلم بالصواب